कॉलेज/विभाग का नाम - मधेपुरा कॉलेज मधेपुरा बीएड विभाग

विषय: ***Childhood and Growing Up (***बाल्यावस्था एवं उसका विकास***)***

वर्ग - बीएड

विषय वस्तु - विकास का स्वरूप

इकाई ***3***

1. विषय***:-*** विकास के बहुआयामी सिद्धांतों का शैक्षिक महत्व***-***

- व्यक्तिगत विभिन्नता का ज्ञान***:-***

  इससे यह पता चलता है कि सभी बच्चों में वृद्धि और विकास की गति और मात्रा एक जैसी नहीं होती। इसलिए बच्चों को पढ़ते समय व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual difference) को ध्यान में रखकर शिक्षा को प्रस्तुत करना चाहिए।

- भविष्यवाणी करने में सहायक***:-***

  इससे बालकों में वृद्धि और विकास में होने वाली प्रगति का पता चलता है कि आगे चलकर बालक किस प्रकार का विकास करेगा। अतः शिक्षा प्रस्तुत करते समय यह अवश्य ध्यान देना चाहिए कि बालक आगे चलकर क्या बनेगा।

- सर्वांगीण विकास में उपयोगी - वृद्धि और विकास की सभी दिशाएं ***(different aspects):-***

  जो कि शारीरिक विकास, संवेगात्मक या सामाजिक विकास, मानसिक विकास आदि सभी एक दूसरे के साथ परस्पर जुड़े हुए हैं। इन सभी के बारे में जानकर बालक के सर्वांगीण विकास पर अच्छे से ध्यान दिया जा सकता है। अगर किसी एक पहलू पर ध्यान नहीं दिया जाए तो इससे किसी दूसरे पहलू में हो रही उन्नति में बाधा पहुंचती है। तो इसलिए बालक सर्वांगीण विकास पर ध्यान देना अति आवश्यक है। जो कि परस्पर संबंध के सिद्धांत द्वारा पूरा होता है।

- वंश तथा वातावरण के प्रभाव का ज्ञान***:-***

  बच्चे की वृद्धि और विकास के लिए वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों का बहुत महत्व है। इनमें से किसी की भी अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। इस प्रकार से इन तथ्यों को जानकर बालकों में आवश्यक सुधार ला सकते हैं ताकि बच्चों का अधिकाधिक विकास हो सके।

- सामान्यता अथवा असमानता की मात्रा का ज्ञान***:-***

  वृद्धि और विकास सिद्धांतों को जानकर हमें यह पता चलता है कि अगर किसी एक जाति के सदस्यों में वृद्धि तथा

विकास संबंधी एकरूपता देखी जा सकती है। इस प्रकार से यदि वृद्धि और विकास की दर एक समान ना हो तो यह जानकर बाल के वातावरण में परिवर्तन करके तथा उचित शिक्षण प्रदान कर के विकास में बढ़ोतरी की जा सकती है।

- <u>माता पिता और अध्यापकों में ज्ञान***:-***</u>

  माता-पिता और अध्यापकों को वृद्धि और विकास को ध्यान में रखकर बालकों में होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में रखा जा सकता है। अतः इसकी मदद से आने वाली समस्याओं की समुचित तैयारी कर सकते हैं। यह सिद्धांत माता-पिता और अध्यापकों के लिए अत्यधिक उपयोगी है, क्योंकि यह उन्हें बताता है कि विकास तथा वृद्धि के लिए कौनसी तत्व सहायक है और कौन से तत्व नहीं है।

- <u>शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सहायक***:-***</u>

  वृद्धि और विकास के सिद्धांत शिक्षण प्रक्रिया में प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है। इस प्रणाली से शिक्षक बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नता को अच्छे से समझ जाता है और उसके अनुसार बच्चों को ऐसी शिक्षण विधियों द्वारा पढ़ाता है जिससे सभी बच्चे लाभान्वित हो पाए।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि वृद्धि और विकास संबंधी सिद्धांत बालकों के संपूर्ण विकास में उचित दिशा प्रदान करते हैं जो कि उनके भावी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः कहा जा सकता है कि एक सफल शिक्षक को वृद्धि तथा विकास के सिद्धांतों का समुचित ज्ञान होना चाहिए।

2. <u>विषय***:-*** विकास के कारण ***-***</u>

पर मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न अध्ययनों के बाद विकास के निम्नलिखित कारणों को चिन्हित किया-

- परिपक्वता **(Maturation) —** हरलॉक के अनुसार —"परिपक्वता की अवधि से तात्पर्य व्यक्ति में मौजूद आंतरिक योग्यताओं का विकास है उनका अनावरण है।" माता-पिता तथा अन्य पूर्वजों से प्राप्त अनुवांशिकता के कारण प्रत्येक व्यक्ति में अंतर्गुंजात रहते हैं। यह बालक के विकास पर सीधी निर्भर नहीं रहती है बल्कि पर्यावरण में जिन विभिन्न घटकों के संपर्क में आता है उनसे भी कुछ सीमा तक इसको उद्दीपन मिलता है तथा प्रभावित होता है। परिपक्वता की प्रक्रिया बालक के विकास को जन्म से लेकर तब तक प्रभावित करती रहती है जब तक कि उसका स्नायुतंत्र पूर्ण रूप से दृढ़ परिपक्व नहीं हो जाता है। वुल्फ तथा वुल्फ के अनुसार — "परिपक्वता का अर्थ विकास की उस निश्चित अवस्था से है इसमें बालक भी कार्य करने योग्य हो जाते हैं जो इस अवस्था के पूर्व नहीं कर सकते थे।" इस प्रकार परिपक्वता, व्यक्ति के आंतरिक विकास की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के कारण ही बालक की शारीरिक अवयवों में नवीन क्रिया को सीखने की क्षमता आती है।

- अधिगम या सीखना **(Learning) —** सीखना व्यक्ति के अभ्यास और अनुभव का संकेत देती है। व्यक्ति व्यवहार में परिवर्तन एक कार्य को अभ्यास करके या केवल पुनरावृत्ति से सीख कर सही समय पर होता है। अथवा एक ऐसा परिवर्तन एक नैसर्गिक चयन, निर्देशन और प्रयोजनमूलक प्रकार के कार्य प्रशिक्षण से आता है। सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इसके कारण ही बालक विकास की ओर बढ़ता है।

परिपक्वता तथा अधिगम क्रियाओं में घनिष्ठ संबंध होता है। दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करती है और विकास की दृष्टि से दोनों ही महत्वपूर्ण है। परिपक्वता का संबंध वंशानुक्रम से तथा अधिगम का संबंध वातावरण से है। परिपक्वता और अधिगम इस तरह से एक दूसरे से जुड़े रहते हैं कि एक की तीव्रता दूसरे को तीव्र तथा एक की

मंदता दूसरे की गति को मंद कर देती है। हरलॉक के अनुसार— "परिपक्वता शिक्षा की कच्ची सामग्री है तथा व्यक्ति व्यवहार की पहले से अधिक सामान्य व्यवस्थाओं और श्रेणियों का बड़ी सीमा तक अवधारणा करती है। विकास पर वातावरण के प्रभावों या सीखने के महत्व को किसी तरह कम नहीं करती है।

3. <u>विषय***:-*** विकास को प्रभावित करने वाले कारक **-**</u>

बच्चों की शारीरिक प्रकृति और उन्हें दिया जाने वाला पोषण, दोनों ही वृद्धि और विकास में काम आते हैं। यद्यपि प्रकृति द्वारा दिए गए गुण स्थिर होते हैं, लेकिन पोषण का प्रभाव भी बहुत गहरा होता है। यहां बच्चों की वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कुछ कारक दिए गए हैं:-

- अनुवांशिकता —जीन के माध्यम से, माता-पिता की शारीरिक विशेषताएं उनके बच्चों में पहुंचना अनुवांशिकता कहलाता है। यह बच्चों के सभी शारीरिक गुणों को प्रभावित करता है जैसे कि लंबाई, वजन, शरीर की बनावट, आंखों का रंग, बालों की बनावट और यहां तक कि बुद्धि और योग्यता भी। वही हृदय रोग, डायबिटीज, मोटापा आदि जैसी बीमारियां और समस्याएं भी जीन के माध्यम से बच्चे में जा सकती है, जिससे उसकी वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हालांकि, भारी कारक और बच्चे को दिया जाने वाला पोषण जी में पहले से मौजूद गुणों पर काम करके उन्हें बेहतर तरीके से विकसित कर सकते हैं।

- पर्यावरण— पर्यावरण बच्चों के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बचपन के शुरुआती दिनों में विकास को प्रभावित करने वाले कुछ पर्यावरणीय कारकों में, वह जगह जहां बच्चा रहता है वहां की भौतिक व भौगोलिक परिस्थितियां, उसका सामाजिक परिवेश और परिवार व आसपास लोग आदि शामिल है। यह समझना एकदम आसान है कि जिस बच्चे को उचित वातावरण मिलता है, उसका विकास किसी ऐसे बच्चे से बेहतर होगा जिसके पास इसका अभाव है; बच्चे जिस परिवेश में रहते हैं, उसका उनकी प्रगति पर असर पड़ता है। एक अच्छा स्कूल और प्रेमपूर्ण परिवार बच्चों में सामाजिक व पारस्परिक गुणों का विकास करते हैं, जो उन्हें आगे जाकर पढ़ाई और अन्य एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज जैसी बातों में बेहतरीन करने ऊंचाइयों पर पहुंचाने में मददगार होते हैं। जो बच्चे इसके उलट, तनावपूर्ण वातावरण में बढ़ते हैं, वे निश्चित रूप से अलग होते हैं।

- लिंग**:-** बच्चे का लिंग, बच्चे के शारीरिक वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाला एक अन्य प्रमुख कारक है। खासकर प्यूबर्टी, (युवावस्था) के करीब, लड़के और लड़कियां अलग अलग तरीके से बढ़ते हैं। लड़कियों की तुलना में लड़कों की लंबाई और ताकत ज्यादा होती है। जबकि लड़कियां किशोरावस्था में अपेक्षाकृत जल्दी परिपक्व होती है और लड़कों में यह विकास काफी देर से होता है। उनके शरीर की बनावट में भी अंतर होता है, जिसमें लड़के अधिक एथलेटिक और शारीरिक श्रम वाली गतिविधियां करने के लिए सक्षम होते हैं। उनका स्वभाव विभिन्न होता है, जिससे वे अलग-अलग तरह की चीजों में रूचि दिखाते हैं।

- एक्सरसाइज और हेल्थ**:-** यहां एक्सरसाइज शब्द का अर्थ अनुशासनात्मक शारीरिक व्यायाम से नहीं है या यह सोच कर कि इससे उन्हें बढ़ने में मदद मिलेगी, बच्चों को जानबूझकर शारीरिक गतिविधियों में लगाना भी नहीं है। यहां एक्सरसाइज का अर्थ है, बच्चों के लिए सामान्य खेलने का समय और उनकी खेल से जुड़ी ऐसी गतिविधियां है जो शरीर को मांसपेशियों की ताकत और हड्डी का विकास करने में मदद करती है। सही एक्सरसाइज बच्चों को अच्छी तरह से बढ़ने और सही समय पर या उससे पहले विकास के माइलस्टोन तक पहुंचने में मदद करती है। एक्सरसाइज उन्हें स्वस्थ भी रखती है और बीमारियों से लड़ने के लिए इम्यूनिटी को मजबूत करती है, खासकर अगर बच्चे घर से बाहर जाकर खेलते हैं। इसकी वजह यह भी है कि बाहर खेलने से वे जर्म्स के संपर्क में आते हैं और इन्हें उन्हें इम्यूनिटी विकसित करने और इन्फेक्शन को रोकने में मदद मिलती है।

- हार्मोन**:-** हार्मोन एंडोक्राइन सिस्टम से संबंधित है और हमारे शरीर के विभिन्न कार्यों को प्रभावित करते हैं। शरीर के कुछ विशेष भागों में स्थित अलग-अलग ग्लांड्स (ग्रंथियों) शरीर के कार्यों को नियंत्रित करने वाले हार्मोन को

रिलीज करते हैं। बच्चों में सामान्य शारीरिक वृद्धि और विकास के लिए उनका नियत समय पर कार्य करना जरूरी है। हार्मोन रिलीज करने वाली ग्लैंडस के कामकाज में असंतुलन से बच्चे विकास में दोष, मोटापा, व्यवहार संबंधी समस्याएं और अन्य बीमारियां भी हो सकती है। प्यूबर्टी के दौरान, गोनाड ग्लैंड, सेक्स हार्मोन बनाती है, जो यौन अंगों का विकास तथा लड़कों और लड़कियों में यौन विशेषताओं की उपस्थिति को नियंत्रित करते हैं।

- पोषण:- पोषण यानी न्यूट्रीशन, वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि शरीर को विकास और मरम्मत की जरूरत होती है जो कि भोजन द्वारा ही होता है। कुपोषण से बच्चों में विकास संबंधी बीमारियां हो सकती हैं, जो उनकी वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। दूसरी ओर, अधिक भोजन से मोटापा और लंबे समय तक सेहत से जुड़ी समस्याएं भी हो सकती हैं, जैसे कि डायबिटीज और हृदय रोग। एक संतुलित आहार जो विटामिन, खनिज, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और फैट से भरपूर हो, मस्तिष्क और शरीर के विकास के आवश्यक है।

- पारिवारिक प्रभाव :- परिवार, बच्चों का पोषण करने और उसे मानसिक और सामाजिक रूप से विकसित करने में सबसे ज्यादा प्रभावशाली होता है। अपने माता-पिता, दादा-दादी या जो कोई भी घर पर हो उनकी देखभाल करता है, की देखरेख में बड़े होते हैं, उन्हें एक अच्छे व्यक्ति के रूप में विकसित करने के लिए बुनियादी प्यार, देखभाल और शिष्टाचार की आवश्यकता होती है। सबसे सकारात्मक वृद्धि तब देखी जाती है जब परिवार विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चे के विकास में समय, ऊर्जा और प्यार का निवेश करते हैं, जैसे कि उन्हें पढ़ाना, उनके साथ खेलना और गहरी सार्थक बातचीत करना। जो बच्चों के साथ दुर्व्यवहार या सामाजिक उपेक्षा करते हैं, वहां बच्चों का सकारात्मक विकास प्रभावित होता है। यह बच्चे ऐसे व्यस्को के रूप में विकसित हो सकते हैं जिनका सामाजिक कौशल पर्याप्त होता है और जीने अन्य लोगों के साथ संबंध जोड़ने में कठिनाई होती है। 'हेलीकॉप्टर पेरेंटिंग' से भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि ऐसे बच्चे माता-पिता पर निर्भर रहते हैं और स्वयं जीवन की कठिनाइयों से निपटने में असमर्थ होते हैं।

- भौगोलिक प्रभाव **:-** आप जहां रहते हैं, इस बात का भी आपके बच्चों का विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वह कौन से स्कूल में पढ़ते हैं, किस मोहल्ले में रहते हैं, समुदाय द्वारा उन्हें कौन से अवसर पेश किए जाते हैं और उनकी संगति किस प्रकार की है आदि बच्चे के विकास को प्रभावित करने वाले कुछ सामाजिक कारक हैं। एक विकसित समुदाय में रहने जिसमें खेलने के लिए पार्क, लाइब्रेरी और कम्युनिटी सेंटर मौजूद है, यह सभी सुविधाएं किसी बच्चे के कौशल, प्रतिभा और व्यवहार को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वही नीरज समुदाय, बच्चों को अक्सर बाहर जाने के बजाय घर पर रहकर वीडियो गेम खेलने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। यहां तक कि किसी जगह का मौसम भी बच्चों को दूसरी जगह एडजस्ट होने, एलर्जी और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं जैसी बातों को प्रभावित करता है।

- सामाजिक आर्थिक स्थिति :- एक परिवार की सामाजिक - आर्थिक स्थिति भी किसी बच्चे को मिलने वाले अवसर की क्वालिटी को निर्धारित करती है। बेहतर स्कूल में पढ़ाई करना जो निश्चित रूप से अधिक महंगे होते हैं, लंबे समय तक लाभकारी होता है। संपन्न परिवार अपने बच्चों के लिए बेहतर सीखने के संसाधन भी प्रदान कर सकते हैं और अगर बच्चों को किसी विशेष सहायता की आवश्यकता होती है तो वे उसके उसका खर्च उठा लेते हैं। गरीब परिवारों के बच्चों के पास अपने अंदर की पूरी क्षमता को हासिल करने के लिए, शैक्षिक संसाधनों और अच्छे पोषण तक पहुंच नहीं होती है। उनके माता-पिता दोनों काम पर जाने वाले भी हो सकते हैं जो कई घंटे तक काम करते हैं और वे अपने बच्चों के विकास के लिए पर्याप्त क्वालिटी टाइम नहीं दे पाते हैं।

- सीखना और निपुण होना **:-** स्कूली शिक्षा की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है सीखना। यह मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से बच्चे के निर्माण से भी संबंधित है, जिससे वे समाज में एक स्वस्थ और व्यस्क के रूप में काम करते हैं। यहां पर बच्चे के दिमाग का विकास होता है और बच्चा कुछ परिपक्वता हासिल कर सकता है। स्विधिकरण सीखने की पूरी प्रक्रिया का एक घटक है जहां एक गतिविधि या व्यायाम को दोहराया जाता है और सीखी गई चीज में कुशल बनाया जाता है। उदाहरण के तौर पर जब एक बच्चा कई कोई इंस्ट्रूमेंट बजाता

रहता है; तो वह इसे बजाने में बेहतर हो जाता है क्योंकि वह इंस्ट्रूमेंट बजाने का अभ्यास करता रहता है। इसीलिए, जो कुछ भी सिखाया जाता है, उसे सही परिणाम प्राप्त होने तक दोहराया जाना चाहिए।

यद्यपि प्रकृति, बच्चों की वृद्धि और विकास में योगदान देती है, लेकिन पोषण बहुत अधिक योगदान देता है। जैसे कि पहले उल्लेख किया गया है, इनमें से कुछ कारकों पर नियंत्रण नहीं हो सकता है, और आपके पास जो उपलब्ध है, उसके साथ ही काम करना होगा। लेकिन कुछ चीजें हैं, जिन्हें आप अपने बच्चे के लिए सुनिश्चित कर सकते हैं। इसमें यह ध्यान देना शामिल है कि आपके बच्चे को हर दिन पर्याप्त आराम मिले, क्योंकि उसका विकास बहुत अधिक नींद की मात्रा पर निर्भर करता है। अपने बच्चे के पोषण और एक्टिविटी के स्तर पर पूरा ध्यान दें, क्योंकि यह भी आपके बच्चे के सही समय पर स्वस्थ विकास और वृद्धि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. <u>विषय***:-*** वृद्धि एवं विकास के विभिन्न आयाम</u>

- शारीरिक वृद्धि एवं विकास (Physical Development)
- सामाजिक विकास संवेगात्मक विकास (Social and Emotional Development)
- भाषाई विकास (Language Development)
- नैतिक विकास (Moral Development)
- संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

- शारीरिक वृद्धि एवं विकास**:-** जन्म से पूर्व भ्रूण के स्थापित होने के साथ ही व्यक्ति का शारीरिक विकास प्रारंभ हो जाता है जो कि एक स्वाभाविक, प्राकृतिक एवं सतत प्रक्रिया है जिस पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव पड़ता है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास में मुख्यतः निम्न अंकित बातें देखने को मिलती है :-

    - <u>शैशवावस्था में शारीरिक विकास</u> :- शैशवावस्था में जन्म के प्रथम सप्ताह उपरांत शिशु के भार में वृद्धि होती है जो शैश्वावस्था की समाप्ति तक सामान्यतः 40 पौढ़ के लगभग हो जाता है। शिशु की लंबाई में भी 20 इंच से आरंभ होकर 40 से 42 इंच तक की वृद्धि होती है। प्रारंभ के 2 वर्षों में शिशु के सिर का विकास तेजी से होता है जो बाद में अन्य अंगों में विकास की अपेक्षा में मंद पड़ जाता है। शैशवास्था में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में शारीरिक विकास अधिक तीव्रता से होता है।

    - <u>बाल्यावस्था में शारीरिक विकास</u> :- बाल्यावस्था शारीरिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसमें बालक में अनेक शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक परिवर्तन होने लगते हैं। शारीरिक तौर पर बालक का भार पर्याप्त बढ़ जाता है। 10 वर्ष की आयु के बाद लड़कियों के भार में लड़कों की अपेक्षा अधिक वृद्धि होती है। लंबाई की बढ़ोतरी इस अवस्था में अपेक्षाकृत कम होती है।

    - <u>किशोरावस्था में शारीरिक विकास</u> :- किशोरावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण व जटिल अवस्था है। इसमें आंतरिक व बाह्य दोनों स्तरों में सबसे ज्यादा परिवर्तन होते हैं। मांसपेशियों हड्डियों के मजबूत होने के कारण भार में अधिक वृद्धि होती है। लंबाई भी तेजी से बढ़ती है।

- सामाजिक विकास**-**संवेगात्मक विकास***:-*** संवेग अर्थात भावना या भावों तीव्र या उद्दीप अवस्था को कहते हैं। भय, क्रोध, ईर्ष्या चिंता आदि संवेग का उदाहरण है। संवेग परिस्थितियों की जटिल अवस्था है जो कभी व्यक्ति के कार्य में बाधक होती है तो कभी प्रेरणापद भी होती है। बालक के जीवन में संवेगों का बड़ा महत्व है। संवेग के कारण बालक क्रियाएं करता है और संवेगात्मक क्रियाओं की पुनरावृत्ति धीरे-धीरे आदत बन जाती है। संवेग की कुछ विशेषताएं निम्न है :

    - बालकों में संदेश थोड़ी देर के लिए ही होते हैं।

- बालकों में संवेग की उत्पत्ति जल्दी जल्दी होती है।
- बालकों में तीव्र संवेद घातक नहीं होते जबकि किशोरावस्था में हानिकारक हो सकते हैं।

- भाषाई विकास**:-** उन लोगों को छोड़कर जो अत्यधिक रूप से पिछड़े हैं और प्रतिबंधित है सभी एक ही तरीके से अपनी अपनी भाषा का विकास करते हैं। यह भिन्न बात है कि विकास की गति हर एक ही अलग अलग होती है। ऐसी स्थिति में बालक की परिपक्वता नहीं होने की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

  भाषा के विभिन्न अंश और उसके प्रयोग के तरीके बहुत कुछ हद तक अनुभव पर (वातावरण की भूमिका) निर्भर करते हैं। भाषा के काफी अंश समाजीकरण की प्रक्रिया में सीखी जाती है। वंश **(Bernstein 1971)** विभिन्न भाषाओं के विकास और संप्रेषण प्रक्रियाओं के आधार पर महत्वपूर्ण परिवारों के बच्चों के बीच अंतर करते हैं। ऐसे परिवार में होते हैं, जहां संप्रेषण अधिक सीमित होती है और जहां बच्चों की बात बहुत कम सुनी जाती है और उन पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है तथा जो व्यक्ति केंद्रित परिवारों से संबंधित होते हैं। जो ऐसे परिवारों के बच्चे हैं जहां संप्रेषण मुक्त रूप से चलता है वहां भाषा का विकास सहजता के साथ होता है।

- नैतिक विकास**:-** प्रायः आप अपने बच्चों या विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार जैसे अपने से बड़ों का आज्ञा पालन करो, ईमानदार बनो, मेहमानों का स्वागत करो, झूठ मत बोलो, विनम्रता से बात करो, पशुओं को हानि मत पहुंचाओ, भगवान की प्रार्थना करो, तुम लड़की हो ऐसा मत करो इत्यादि के बारे में बताते होंगे। वास्तव में ऐसा बताकर उन्हें सामाजिक नियमों की महत्ता/आवश्यकता से परिचित करवाते हो। दूसरे शब्दों में आप उनके सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार के प्रति जागरूक बनना चाहते हो।

  सामान्यता माध्यमिक विद्यालय स्तर के बालक दूसरे लोगों द्वारा उन नियमों का पालन न करते देख भ्रमित होते हैं जो कुछ लोगों पर लागू होते हैं, परंतु कुछ लोगों पर नहीं। उदाहरण के लिए, हम बच्चों को अपनी कॉपियों से पृष्ठ फाड़ने से मना करते हैं लेकिन कई बार हम उन की कॉपियों से दो या तीन खाली पृष्ठ फाड़ लेते हैं। प्रायः हम उन्हें झूठ न बोलने की शिक्षा देते हैं। लेकिन स्कूल और समुदाय दोनों में ही लोगों को छोटी-छोटी चीजों के लिए झूठ बोलते हुए देखते हैं। इस प्रकार के अनुभव शायद बालकों के नियमों के प्रति यों को परिवर्तित कर देते हैं।

- संज्ञानात्मक विकास**:-** संज्ञान का अर्थ होता है— देखना, अवबोधन करना, समझना, अंतर्निहित करना अथवा जानना। तब संज्ञानात्मक विकास का अर्थ होगा - जानने की वृद्धि तथा क्षमता, समयानुसार समझना और अवबोधन करना जो की परिपक्वता तथा वातावरण के साथ अंतः क्रिया करने से सुसाध्य होता है। संज्ञान में मानसिक प्रति मानव की संरचना करने की योग्यता समाहित है जिसमें विचार, तर्क, स्मृति और भाषा की भूमिका है। जैसे ही आसपास के वातावरण (बाहरी दुनिया) का निरीक्षण, अवबोधन तथा मानसिक प्रक्रिया के रूप में उसको अन्तर्भूत या अंतर्निहित किया जाता है, मानसिक बिंबों का निर्माण होता है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का उसकी प्रेक्षण करने की विशिष्ट रीति के अनुसार उसका अपना विशिष्ट प्रतिमान होता है। यही एक तरीका है जिससे सीखने वाला (अधिगमकर्ता) अपने आसपास के वातावरण के बारे में सीखता है।

5. <u>विषय***:-*** शिक्षण की अध्ययन विधियां</u>

- निगमनात्मक तथा आगमनात्मक विधि
- संश्लेषणनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि
- वस्तु विधि
- दृष्टांत विधि
- कथन विधि एवं व्याख्यान विधि
- प्रश्नोत्तर विधि सुकृति विधि
- शोध विधि

- प्रोजेक्ट विधि
- डाल्टन योजना
- वर्धा योजना या बुनियादी तालीम
- खेल विधि
- वैज्ञानिक विधि
- मूल्यांकन विधि
- सूक्ष्म शिक्षण विधि
- संवाद विधि

6. <u>विषय***:-*** निरीक्षण या अवलोकन विधि</u>

हम जानते हैं की अंग्रेजी शब्द के Observation शब्द को निरीक्षण कहा जाता है। जिसका अर्थ होता है निरीक्षण करना या देखना। हम यह भी देखते हैं इस निरीक्षण में अधिकतर आंखों का प्रयोग किया जाता है। कानों और वाणी का कम। इस विधि के द्वारा प्रत्यक्ष मिलती है। छोटे बच्चे न तो प्रश्नों को ठीक से समझ पाते हैं और न ही उसके उत्तर दे पाते हैं। अतः उनके व्यवहार का अध्ययन करने के लिए निरीक्षणकर्ता बच्चों के समूह में भाग लेता है अथवा दूर खड़ा होकर उनके व्यवहार का अध्ययन करता है। तत्पश्चात बच्चों के व्यवहार को देखकर वह विश्लेषण द्वारा खुद तथ्यों का पता लगाता है और उनकी व्याख्या करता है इस निधि द्वारा बच्चों के सामाजिक विकास, समाज और उनके व्यक्तित्व का संबंध उनके नेतृत्व आदि का पता लगाया जाता है।

निरीक्षण विधि के निम्नलिखित प्रकार**:-**

- <u>सरल अथवा अनियंत्रित विधि**:-**</u> इस विधि में निरीक्षक किसी के व्यवहार का अध्ययन उसकी स्वाभाविक परिस्थिति में तथा उस पर कोई प्रतिरोध लगाए बिना करता है। निरीक्षक का काम व्यवहार का बिना बाधा डाले सिर्फ निरीक्षण करने जाना होता है। इस विधि में व्यवहार के प्रभाव को रोका नहीं जाता। उदाहरण के लिए माना कि निरीक्षक भीड़ के व्यवहार का निरीक्षण करना चाहता है तो इस विधि द्वारा व उसके व्यवहार को अलग से अर्थात दूर से देखता है, उसकी वाणी को सुनता है, उसकी क्रियाओं, भावों एवं स्वयं को नोट करता रहता है, पर उससे कुछ पूछना नहीं है। इसे अनियंत्रित विधि इसीलिए कहते हैं क्योंकि किसी भी घटना का निरीक्षण प्राकृतिक परिस्थितियों में किया जाता है और उन परिस्थितियों पर कोई दबाव नहीं डाला जाता।

- <u>व्यवस्थित अथवा नियंत्रित निरीक्षण विधि**:-**</u> इस विधि को व्यवस्थित विधि भी कहते हैं। इसमें निरीक्षक निरीक्षण की योजना पहले से बना लेता है तथा पूर्व नियोजित तथा व्यवस्थित योजना के अनुसार निरीक्षण करता है। इस योजना द्वारा निरीक्षण पर नियंत्रण किया जाता है, जिससे निरीक्षण की त्रुटियों में कमी आती है या नियंत्रण दो प्रकार का होता है। एक तो निरीक्षक स्वयं पर नियंत्रण करता है दूसरा अनिरीक्षित योजना पर नियंत्रण किया जाता है।

- <u>आयोजित निरीक्षण**:-**</u> इस निरीक्षण में निरीक्षण करता एक विशेष वातावरण तैयार करता है किसी विशिष्ट विशेषताओं या घटनाओं को जानने के लिए। इस निरीक्षण में पूर्व नियोजित नियंत्रण रखा जाता है तथा फिर बच्चों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के निरीक्षण को या तो आयोजित या नियंत्रित निरीक्षण कहलाता है। अतः इसमें बच्चों का अध्ययन व्यवस्थित एवं नियंत्रित वातावरण में किया जाता है।

- <u>सहभागी निरीक्षण**:-**</u> इस विधि द्वारा निरीक्षण करने वाला व्यक्ति स्वयं उस समूह में सदस्य के रूप में कार्य करता है जिस समूह का उसे निरीक्षण करना होता है। वह समूह की सभी क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेता है तथा सूक्ष्म रूप में सदस्यों के व्यवहार को नोट कर लेता है, परंतु जब समूह के सदस्यों को निरीक्षणकर्ता का पता चल जाता है तो वह अपने वास्तविक व्यवहार को छुपाने की कोशिश करते हैं जिससे निरीक्षणकर्ता निष्पक्ष और वस्तुगत

जानकारी प्राप्त नहीं कर पाता।

- <u>असहभागी निरीक्षण:-</u> इस निरीक्षण विधि में निरीक्षणकर्ता विद्यार्थियों के समूह से बाहर रहकर उनके व्यवहार का निरीक्षण करता है। इस विधि में निरीक्षण करता और समूह के सदस्यों में पारस्परिक अंतर क्रिया नहीं हो पाती। इस विधि द्वारा प्राप्त किए गए परिणाम अपेक्षाकृत निष्पक्ष और वस्तुगत होते हैं।

- <u>सामूहिक निरीक्षण:-</u> इस विधि में नियंत्रित और अनियंत्रित दोनों प्रकार की विधियों का बराबर से प्रयोग किया जाता है। इस विधि द्वारा बालकों की समस्या या किसी घटना का निरीक्षण उनके अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाता है। जो सामाजिक घटना के विशिष्ट पहलुओं के विशेषज्ञ होते हैं।

7. <u>विषय*:-* साक्षात्कार विधि</u>

सामान्यतः दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा किसी विशेष उद्देश्य से आमने-सामने की गई बातचीत को साक्षात्कार कहा जाता है। साक्षात्कार एक प्रकार की मौखिक प्रश्नावली है जिसमें हम किसी भी व्यक्ति के विचारों और प्रतिक्रियाओं का लिखने के बजाय उसके सम्मुख रहकर बातचीत करके प्राप्त करते हैं।

साक्षात्कार विधि एक आत्म निष्ठ विधि है। इसके माध्यम से प्राप्त सूचनाओं की सार्थकता एवं वैधता साक्षात्कारकर्ता पर निर्भर करता है। सूचना संकल्प कि इस विधि के प्रयोग में साक्षात्कारकर्ता के लिए दक्षता अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़े सरलता से पक्षपात पूर्ण बन सकते हैं। साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता वार्तालाप के साथ-साथ शाब्दिक के अर्थपूर्ण तथा अशाब्दिक प्रतिक्रियाओं (इशारा करना तथा मुख्मुद्रा) का भी प्रयोग करता है। साक्षात्कार को विद्वानों ने परिभाषित किया है - गुड एव हैट के अनुसार-" किसी उद्देश्य से किया गया गंभीर वार्तालाप ही साक्षात्कार है।" डेजिन ने साक्षात्कार को इस प्रकार परिभाषित किया है-

- दो व्यक्तियों के मध्य संबंध।
- एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने का साधन।
- साक्षात्कार से संबंधित दोनों व्यक्तियों में से एक व्यक्ति को साक्षात्कार के उद्देश्य के विषय में संज्ञान।

साक्षात्कार के तीन प्रमुख अवयव होते हैं -

- साक्षात्कारकर्ता
- साक्षात्कार हेतु प्रश्न
- साक्षात्कार देने वाला दो व्यक्तियों के बीच यदि बातचीत नीर उद्देश्य है तो उसे साक्षात्कार नहीं कहा जा सकता।

साक्षात्कार के प्रकार**:-**

शोध वैज्ञानिकों ने साक्षात्कार के विभिन्न प्रकारों का वर्णन किया है। साक्षात्कार को मूलतः कार्य उद्देश्य के आधार पर तथा रचना के आधार पर विभिन्न भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। कार्य या उद्देश्य के आधार पर साक्षात्कार के मुख्य प्रकार बताए गए हैं-

- <u>चयनात्मक साक्षात्कार</u> **-** जब साक्षात्कार का प्रयोग किसी भी जीविका में नवीन नियुक्ति हेतु चयन के लिए किया जाता है तो इस प्रकार के साक्षात्कार को चयनात्मक साक्षात्कार कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार में साक्षात्कार प्रदाता से उस जीविका में उपयोगिता से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। साक्षात्कारकर्ता कुछ ऐसे प्रश्न पूछता है जिसके आधार पर साक्षात्कार प्रदाता की अभिवृद्धि, अभिक्षमता, योग्यताओं, आचरण आदि के बारे में आसानी से जाना जा सकता है। इस तरह के साक्षात्कार का मूल उद्देश्य पता लगाना होता है कि साक्षात्कार प्रदाता कहां तक

अपनी अभिवृत्ति, अभिक्षमता, योग्यताओं के आधार पर नौकरी के लिए योग्य होगा।

- शोध साक्षात्कार- इस प्रकार के साक्षात्कार में किसी विषय पर विभिन्न व्यक्तियों के विचारों का जानने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति की रुचि उन तथ्यों में होती है जो कि साक्षात्कार देने वाले के विचारों में सम्मिलित है। इसके लिए कुछ ही प्रतिनिधि व्यक्तियों को छोड़कर केवल उन्हीं का साक्षात्कार किया जाता है। इन प्रतिनिधि व्यक्तियों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पूर्ण जनसंख्या के विचारों के बारे में अनुमान लगाया जाता है। इसलिए इसे न्यादर्श साक्षात्कार भी कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य शोध समस्याओं के प्रस्तावित समाधान के बारे में एक विस्तृत ब्यौरा तैयार करना होता है। इस तरह का शोध अधिकतर उन वैज्ञानिकों द्वारा किया जाता है जो किसी विशेष समस्या का उत्तर तुरंत पा लेना चाहते हैं।

- निदानात्मक साक्षात्कार:- इस प्रकार के साक्षात्कार के माध्यम से साक्षात्कारकर्ता बालक या किसी व्यक्ति की समस्या के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता है। किसी विद्यालय में शिक्षक द्वारा छात्रों के किसी विशेष समस्या के विषय में सूचनाएं एकत्र करने के लिए प्रयुक्त साक्षात्कार इस प्रकार के साक्षात्कार का उदाहरण है।

- उपचारात्मक साक्षात्कार:- निदानात्मक साक्षात्कार के बाद जब किसी छात्र की समस्या तथा उसके विषय में सूचनाएं एकत्र कर ली जाती है तो उपचारात्मक साक्षात्कार में व्यक्ति से इस प्रकार का वार्तालाप किया जाता है कि उसको अपनी चिंताओं तथा समस्याओं से मुक्त किया जा सके तथा समायोजन सही तरीके से हो सके।

अच्छे साक्षात्कारकर्ता के गुण -

साक्षात्कार एक आत्म निष्ठ विधि है जिसके कारण इसके परिणाम पक्षपात पूर्ण हो जाते हैं। साक्षात्कार में सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि साक्षात्कारकर्ता में अच्छे गुण हों। एक अच्छे साक्षात्कारकर्ता में निम्नलिखित गुण पाए जाने चाहिए:-

- साक्षात्कारकर्ता को अपनी बात सीधी एवं स्पष्ट शब्दों में करनी चाहिए। साक्षात्कार देने वाले पर यह प्रभाव डाले कि वह उस में अधिक रूचि रखता है।

- साक्षात्कारकर्ता को छात्र की अच्छी या बुरी बातों पर आश्चर्य प्रकट नहीं करना चाहिए। छात्र की सभी त्रुटियों, कमियों को "शांतिपूर्ण" सुनना चाहिए।

- तनावपूर्ण स्थिति को समाप्त करने के लिए साक्षात्कारकर्ता को हंसमुख होना चाहिए।

- साक्षात्कार को वार्तालाप एकमात्र अधिकारी नहीं करना चाहिए। वार्तालाप के समय अगर साक्षात्कार देने वाला बोल रहा है तो यह प्रयास करना चाहिए कि उसे बीच में न रोका जाए या अपनी बात न कहीं जाए।

- साक्षात्कारकर्ता को धैर्यवान होना चाहिए। साक्षात्कार प्रदाता को ऐसा लगना चाहिए कि साक्षात्कारकर्ता उसकी बातों में रुचि ले रहा है और सब सद्भावना पूर्ण व्यवहार कर रहा है।

- साक्षात्कार प्रदाता की भावनाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता यदि ऐसा करेगा तो साक्षात्कार प्रदाता अपने संदेशों को निर्विकार रूप से व्यक्त कर सकेगा।

- साक्षात्कारकर्ता को यह प्रयास करना चाहिए कि साक्षात्कार प्रदाता का उस पर विश्वास बना रहे। साक्षात्कार प्रदाता से बिना पूछे साक्षात्कार विषय में किसी और से बात नहीं करनी चाहिए।

8. विषय***:-*** गाथावर्णन विधि

"पूर्व अनुभव या व्यवहार का लेखा तैयार करना।**"**

इस विधि में व्यक्ति अपने किसी पूर्व अनुभव या व्यवहार का वर्णन करता है। मनोवैज्ञानिक उसे सुनकर एक लेखा (Record) तैयार करते हैं और उसके आधार पर अपने निष्कर्ष निकालते हैं। इस विधि का मुख्य दोष यह है कि व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव या व्यवहार का ठीक-ठीक पुनः स्मरण नहीं कर पाता है। इसके अलावा वह उससे संबंधित कुछ बातों को भूल जाता है और कुछ को अपनी ओर से जोड़ देता है। इसलिए इस विधि को अविश्वसनीय बताते हुए स्किनर ने लिखा है — "गाथा वर्णन विधि की पात्रता के कारण इसके परिणाम पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।"

Because of the subjectiveness of the anecdotal device, the result cannot be relied upon."

गाथा वर्णन विधि आत्मगत (Subjective) होने के कारण विश्वसनीय नहीं है। इसका उपयोग पूरक विधि के रूप में किया जाता है।

9. विषय***:-*** कहानी कथन विधि

कहानी-कथन से तात्पर्य है — कहानी कहना या कहानी सुनाना। कहानी कहते समय विषयवस्तु के सूक्ष्म तथा जटिल अंशों को इतना सरल बनाया जाता है कि कक्षा के सभी बालकों को वे स्पष्ट हो जाते हैं।

कहानी-कथन प्रविधि छोटे बालकों की शिक्षा में अधिक उपादेय सिद्ध हुई है। वे अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के होने के कारण कहानी सुनने में पूर्ण रुचि लेते हैं और कहानी द्वारा प्रस्तुत ज्ञान सरलता से समझ लेते हैं और मन में ग्रहण करते हैं।

कहानी-कथन प्रविधि बालकों की जिज्ञासा बढ़ाने में, उनकी काल्पनिक एवं तार्किक शक्तियों के विकास में, विषय वस्तु के सूक्ष्म एवं जटिल अंशों के स्पष्टीकरण में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुई है।

कहानी-कथन अधिकतर छोटी कक्षाओं में ज्यादा लोकप्रिय है, परंतु बड़ी कक्षाओं के छात्रों के साथ भी इस प्रविधि का प्रयोग अच्छे परिणाम देता है। जो शिक्षक अपने विषय का विशेषज्ञ है वह कहानी के रूप में विषयवस्तु को परिवर्तित कर, अंशों को सुगमतापूर्वक छात्रों को समझाने में समर्थ होता है।

कहानी विधि के लाभ **(Merits Of Story Telling Method):-**

कहानी विधि के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:-

1. यह रूचि को विकसित करती है**:-** अपनी रोचकता के कारण कथा तमक या कहानी कथन विधि विद्यार्थियों में इतिहास के प्रति रुचि विकसित करती है इसीलिए सामाजिक अध्ययन शिक्षण में उपयोगी सिद्ध होती है। इस प्रकार मनोरंजक एवं आनंददायक क्रिया के रूप में शिक्षा उसके लिए बोझ नहीं लगती।
2. यह विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को जागृत करती है**:-** कहानियों के प्रति बच्चों की स्वाभाविक रूचि होती है। यह रूचि जितने अधिक विकसित होती है उतना उतना ही अधिक उसमें कल्पना शक्ति का विकास होता है।
3. विद्यार्थियों की जिज्ञासा को संतुष्ट करती हैं**:-** जिज्ञासा तत्व तथा बच्चों में स्वाभाविक रूप से होती है। परिणाम स्वरूप उन्हें अपने आप अनुशासन की प्रवृत्ति जागृत होती है।
4. यह विद्यार्थियों को रचनात्मक क्रियाओं को करने की प्रेरणा प्रदान करती है**:-** कहानी विद्यार्थियों को रचनात्मक कार्य की प्रेरणा प्रदान करती है। प्राचीन काल में गुरु अपने शिष्य को कहानी सुना कर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता था। विद्यार्थी उन वस्तुओं को बनाने की रुचि दिखाते थे। कहानी में वर्णित वस्तुएं बनाना बच्चों की जिज्ञासा को शांत करने में मदद देता है। इसके अतिरिक्त कहानी सुनने के पश्चात उनको कहानी लिखने के भी प्रेरणा मिलती है और यदि इस प्रेरणा का क्रियात्मक रूप देने के अवसर प्रदान किए जाए तो उनमें रचनात्मक लेखन कला का विकास हो सकता है।
5. यह विद्यार्थियों में सद्भाव को विकसित करती है**:-** कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास किया जा

सकता है। अनुकरण के द्वारा उन गुणों को आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। महापुरुषों की कहानियां सुनकर बच्चों में दया का मासटर प्रियता, वीरता, सद्भावना, अहिंसा, दानशीलता आदि कई गुण उत्पन्न हो सकते हैं। इसी तथ्य की ओर संकेत करते हुए जार्विस ने कहा," कहानी से बालकों के आचरण में आदेशों का निर्माण होता है और इस प्रकार इससे उनके चरित्र और व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिलती है।"

कहानी विधि की सीमाएं **(Limitations of Story Telling Method):-**

- सामाजिक अध्ययन की समस्त पाठ्यवस्तु को कहानी विधि के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।
- उच्च कक्षाओं में इस विधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है।
- इस विधि से बालक पाठ्यवस्तु को कहानी के रूप में प्रस्तुत कर सकता है परंतु ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पक्षों का विश्लेषण तथा विभेदीकरण नहीं कर सकता है।
- बालकों की स्मरण शक्ति पर विशेष बल दिया जाता है अन्य पक्षों की अवहेलना होती है।

10. विषय**:-** चिंतनशील जर्नल

बालकों के बारे में अपेक्षित जानकारी एकत्रित करने के कार्य में चिंतनशील जंगलों का काफी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, परंतु यह देखने से पहले यह जाना आवश्यक हो जाता है कि चिंतन जनरल क्या होते हैं और इन्हें किस तरह प्रबंधित तथा काम में लाया जाता है।

अपने सामान्य प्रचलित रूप में एक जनरल, चिंतनशील और सृजक कवियों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करने की क्षमता रखता है जिसके माध्यम से वे विचारों प्रभा भावनाओं तथा निष्कर्षों को अपने ढंग से सबके सामने रख सकते हैं। चिंतनशील जर्नलों के रूप में जिस प्रकार के जर्नल बालकों को अपने स्वयं के अनुभव तथा चिंतन द्वारा प्राप्त विचारों, निष्कर्षों तथा भावनाओं की लिखित रूप में सबके सामने प्रस्तुत करने के लिए काम में लाए जाते हैं, उन्हें चिंतनशील जर्नलों का नाम दिया जाता है। इन्हें विशुद्ध रूप से बालकों द्वारा स्वयं ही प्रबंधित किया जाता है। बालक जो भी अधिगम करते हैं, उन्हें जिस प्रकार के अनुभव (विद्यालय या विद्यालय) के बाहर होते हैं और उनके परिणाम स्वरुप वह जो भी सोचते हैं, जैसे भाव उनके अंदर आते हैं, अनुभव की गई बातों को अपने चिंतन के आधार पर रूप में भी समझते हैं और ग्रहण करते हैं उनको स्पष्ट और खुले मन से अभिव्यक्ति ही लेखक के रूप में इन चिंतनशील जर्नलों में बालकों द्वारा की जाती है। अपने इस रूप में चिंतनशील जर्नल सृजनात्मकता और रचनात्मकता के भी पोषक होते हैं और इस तरह वे बालकों को अपने ढंग से ज्ञान ग्रहण करने और उसका उपयोग करने की क्षमता विकसित करते हैं। इन जर्नलों में बालक अपनी अभिव्यक्ति लिखित रूप में करने हेतु कोरे कागजों का उपयोग कर सकते हैं परंतु उन्हें अपनी लिखी हुई बातों को भलीभांति संभाल कर रखना होता है ताकि दूसरे लोग उनकी भावनाओं तथा विचारों तक इन्हें पढ़कर और अनुभव कर सकें। सामान्य तौर पर एक बालक के चिंतन में जिस प्रकार की सामग्री लिखित रूप में दर्ज होती रहती है उसका संबंध निम्न बातों से होता है—

1. किसी एक दिन या सप्ताह में बालक द्वारा क्या किया गया है, उसने क्या सीखा है अथवा अनुभव किया है, उसका यह दिन यह सप्ताह कैसा रहा आदि।
2. उसे क्या अच्छा लगा क्या नहीं, किस बात में उसे आनंद आया किसमें नहीं, उसने क्या चाहा तथा अपनी चाहत/पसंद की चीज ना होने पर क्या अनुभव किया, उसने कौन-सी बातें भली-भांति की और जिन्हें वह बेहतर ढंग से नहीं कर पाया, इस प्रकार की चिंतनशील अभिव्यक्ति।

3. व्यक्तिगत रूप या दूसरों के साथ मिलकर जो कार्य उसके द्वारा किया गया, वह उसकी दृष्टि में कैसा रहा?

4. जो भी कक्षा में एक संप्रत्यय, सिद्धांत, नियम या विचार के रूप में पढ़ाया गया, वह उसे कितना समझ पाया और किस रूप में अब वह उसका उपयोग करने में समर्थ है।

5. कक्षा सहपाठियों, विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों को मा शिक्षकों को मां माता पिता, परिवार के अन्य सदस्यों का मा पड़ोसियों तथा समुदाय के सदस्यों के साथ अंतः क्रिया करने में उसके अनुभव किस प्रकार के रहे काम आप उसे क्या अच्छा लगा था क्या बुरा, उसके अनुसार उन्हें क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं आदि।

इस प्रकार से एक अभीलिखित दस्तावेज (Recorded Document) के रूप में प्रस्तुत एवं चिंतनशील जर्नल (Reflective Journal) बालक विशेष को एक ऐसा माध्यम प्रदान करने की क्षमता रखता है जिसके द्वारा घर, परिवार, विद्यालय तथा समुदाय के साथ होने वाली अंतः क्रियाओं तथा प्राप्त अनुभवों के ऊपर अपने समीक्षात्मक विचार तथा भावनाओं की खुलकर अभिव्यक्ति कर सके। जो कुछ भी इन जर्नलों में बालकों द्वारा अभिलिखित किया जाता है और जो प्रक्रिया ऐसा करने में उसके द्वारा अपनाई जाती है, उसकी प्रकृति काफी लचीली रहती है।

विद्यार्थियों के द्वारा लिखे जाने वाले यह जर्नल दो प्रारूपों में पाए जाते हैं -

1. संरचित जर्नल **(Structured Journals) :-** इन जर्नलों के लेखन में विद्यार्थियों को कुछ विशेष प्रश्न दिए जाते हैं, जैसे— आज आपने क्या सीखा? आप अपनी सीखी हुई बातों का मूल्यांकन किस प्रकार करना चाहेंगे अथवा आज आपको पूरे दिन घर में या विद्यालय में किस प्रकार के अनुभव हुए? कौन-सी बात अच्छी लगी और क्यों? आदि। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि उन्हें किसी विशेष कहानि या पुस्तक पढ़ने को कहा जाए अथवा किसी प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए कहा जाए और फिर जो कुछ उन्होंने पढ़ा या किया है उस पर चिंतन करते हुए अपना विश्लेषण, चिंतन या उपलब्धि का जर्नलों में अभिलेखन किया जाए। इस कार्य को करने के ढंग के बारे में कोई सरंचित प्रारूप या दिशानिर्देश भी दिए जा सकते हैं।

2. असंरचित या मुक्त प्रारूप जर्नल **(Unsaturated or Free Forms Journals) :-** इस प्रकार के जंगलों में अभी लेखन के कार्य हेतु अध्यापकों द्वारा कोई निश्चित प्रारूप या दिशा निर्देशन नहीं किया दिया नहीं दिया जाता वह दिन और सप्ताह में घर या विद्यालय में जो कुछ भी पढ़ते हैं किसी प्रोजेक्ट या अन्य गतिविधियों में भाग लेते हैं और जिस प्रकार की उन्हें अनुभव होते हैं उनसे संबंधित विचारों और भावों आशा निराशा ओं रुचि और दृष्टिकोण सभी का विमुक्त रूप से अपने ढंग से अभी लेखन करते हैं।

— The End —